सत्यमेव जयते का दम भरनेवाले देश के एक जुझारू कवि का संदेश पूरा तो तब समझा जाता जब कविता का समापन कुछ इस तरह होता कि मार से दूर जा चुकी कोयल को तलाशती बंदूक पर घात लगाए गिद्धों–चीलों, छापामार दस्तों ने आकस्मिक हमला कर बन्दूक को कुछ उसी तरह खत्म कर दिया, जिस तरह उसने कहा था के जवानों ने दुश्मन का सफ़ाया किया था।

पक्ष आमने-सामने हैं। कविता का गद्यान्वय यहां दिया जाता है। पहले दोहे में, नभ में विपुल विराट-सी शासन की बंदूक कंकालों की हूक चांप कर खड़ी हो गई। दूसरे पद में, सभी उस हिटलरी गुमान पर थूक रहे हैं, जिसमें शासन की बन्दूक कानी हो गई । तीसरे पद में, वह शासन की बन्दूक धन्य, धन्य, धन्य है जिससे बधिरता दस गुनी बढ़ी और विनोबा मूक हो गए। चौथे पद में, शासन की बन्दूक जहाँ-तहाँ दगने लगी, जिससे स्वयं सत्य घायल हुआ और अहिंसा चूक गई। अंतिम पाँचवें दोहे में, कोकिला जली ठूँठ पर बैठकर कूक गई ;कि शासन की बंदूक उसका बाल ;भी बाँका न कर सकी ।

स्पष्ट ही, यह कविता बन्दूक से भिड़ने में कंकालों की हूक, सार्वजनिक भर्त्सना, सत्य-अहिंसा, मौन आदि सबको बेबस बताती है। विनोबा-गाँधी तक बहरे-गूँगे दिखते हैं। केवल कोयल है जिसका बन्दूक बाल भी बाँका न कर सकी। लेकिन कवि का ध्यान इस ओर गया हो या न गया हो, तालियों की गूँज मिट चुकने के बाद कुछ को यह ज़रूर खटकता रहेगा कि विषम चुनौती से निबटने के लिए हमारे कवि ने अनवरत और सतत प्रतिरोध की नहीं, पलायन की राह सुझाई है । हरे-भरे पेड़ को जलाकर ठूँठ कर देने के बाद, उस पर आ बैठी कोयल को भी जब बन्दूक ने भून देना चाहा तो उसने फुर्र से उड़कर अपनी जान बचाई ।

सत्यमेव जयते का दम भरनेवाले देश के एक जुझारू कवि का संदेश पूरा तो तब समझा जाता जब कविता का समापन कुछ इस तरह होता कि मार से दूर जा चुकी कोयल को तलाशती बंदूक पर घात लगाए गिद्धों-चीलों, छापामार दस्तों ने आकस्मिक हमला कर बन्दूक को कुछ उसी तरह खत्म कर दिया, जिस तरह उसने कहा था के जवानों ने दुश्मन का सफ़ाया किया था। लेकिन इसके लिए अपेक्षित धैर्य, सूझ या संयम बरतने की जगह, यदि नागार्जुन अविचारित वाहवाही से ही संतुष्ट हो गए तो यही इशारा किया जा सकता है कि गहरे अँधेरे को चीरकर सूरज की किरन फूट पड़नेवाले जिस सरलीकृत समाधान में हमारी बहुतेरी क्रान्तिधर्मी कविता भूलती-भटकती रही, उसका प्रतिवाद अँधेरे में का कवि पहले ही कर चुका था ।

मुक्तिबोध इसे समझ गए थे कि प्रबल शत्रु से निहत्थे और अकेले नहीं लड़ा जा सकता। समानधर्माओं से जुड़कर-मिलकर ही उसे प्रभावी चुनौती दी जा सकेगी। इस विचार से बेखबर तो नागार्जुन भी न होंगे। लेकिन शायद वीरता का यह पारंपरिक आदर्श उनको अधिक खरा मालूम हुआ होगा कि तुम दुश्मन को मार या उससे बच नहीं सकते तो सीना तान उसकी गोली का सामना करो.. या, वह उपयुक्त नहीं, तो किसी भावी प्रतिरोध की योजना बनाने के लिए भागकर अपनी जान बचाओ..वाहवाही के हक़दार तभी हो सकोगे ।

मुमकिन है, इस कविता का मेरा यह पाठ अशुद्ध, भ्रामक या अपर्याप्त हो । तो, आशा है, नागार्जुन-साहित्य के अध्येता मेरे भ्रम का निराकरण करेंगे। वैसे, पाठ के सही होने पर भी, नागार्जुन जैसे समर्थ कवि का अध्ययन स्फुट रीति से नहीं समग्रता में ही किया जाना चाहिए । उनके संपूर्ण अवदान का उचित बोध और आकलन तभी हो सकेगा। ■